इकाई 10 वर्णनात्मक लेखन

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 व्यक्ति का वर्णन
10.3 स्थान, दृश्य या वस्तु का वर्णन
10.4 स्थिति या दशा का वर्णन
10.5 कार्य प्रणाली या प्रक्रिया का वर्णन
10.6 सारांश
10.7 अभ्यासों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

वर्णनात्मक लेखन रचना का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। अक्सर हमें किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या दृश्य का वर्णन करना होता है। ऐसे में, हम उस व्यक्ति, स्थान या वस्तु के बाह्य पक्ष को देखते हैं और उसके बारे में बताते हैं। किसी व्यक्ति के वर्णन में उसका बाह्य रंग रूप एवं कद, उसकी उम्र आदि के साथ-साथ आंतरिक रूप चालढाल, पसंद, नापसंद, आदतों आदि का वर्णन भी आवश्यक हो जाता है। इसी प्रकार, किसी स्थान के वर्णन में उसके वातावरण या माहौल का भी वर्णन अपेक्षित होता है। किसी मंत्र का परिचय देते हुए, उसकी विशेषताओं के साथ-साथ उसकी कार्य प्रणाली को बताना या समझाना अभीष्ट होता है। इस प्रकार के वर्णन के लिए हमें विशिष्ट प्रकार की शब्दावली एवं अभिव्यक्तियों का सहारा लेना पड़ता है।

इस इकाई में हम छोटे-छोटे गद्यांशों के माध्यम से आपको किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, स्थिति, कार्य प्रणाली आदि का वर्णन करना सिखाएँगे। विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से आप वर्णनात्मक शब्दों एवं अभिव्यक्तियों का सही-सही प्रयोग भी सीखेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह सीख जाएँगे कि किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु की विशेषता बताने वाली शब्दावली किस प्रकार की होती है।
- किसी यंत्र (टेप रिकार्डर), टी.वी., वी.सी.आर, कम्प्यूटर आदि को चलाने के लिए निर्देश देने के लिए किस प्रकार की भाषा का उपयोग करेंगे।
- किसी पद के लिए आवेदन भेजने या संपादक के नाम पत्र लिखकर किसी स्थान की सामान्य स्थिति या दशा में सुधार लाने के लिए किस प्रकार वर्णन करेंगे।
- विशिष्ट वर्णनात्मक विशेषणों, अभिव्यक्तियों, क्रियाओं एवं वाक्य संरचनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

जब हम किसी व्यक्ति का वर्णन करते हैं तो हम पहले उसके बाह्य रूप -- आकार, रंग, आयु, वजन आदि का वर्णन करते हैं। फिर उसके आंतरिक रूप -- उसकी आदतों, पसंद, नापसंद, मुख मुद्राओं, चालढाल आदि पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यदि हमें किसी व्यक्ति का चयन, किसी पद के लिए, करना हो तो हमें उसके व्यक्तित्व विवरण के साथ-साथ उसकी शैक्षिक योग्यताओं तथा उनके कार्यानुभव को भी ध्यान में रखना होगा। कभी आपके अड़ोस-पड़ोस मे चोरी हो जाए और चोर आपके सामने से भागता हुआ निकल जाए तो पुलिस में रिपोर्ट लिखाने के लिए आपको उस चोर का हुलिया बताना पड़ सकता है - इसके लिए उस चोर का बाह्य रूप एवं आकार तथा वेशभूषा कैसी थी, यह बताने की जरूरत पड़ सकती है। आपकी दृष्टि जितनी पैनी होगी, उतना ही आपका वर्णन सटीक होगा।

किसी पद के लिए आवेदन प्रपत्र भरने या पासपोर्ट बनवाने के लिए आपको कुछ आवश्यक सूचनाएं भरनी होती हैं - यह भी एक प्रकार का वर्णन है।

इसी प्रकार किसी कार्य को करने की विधि या किसी यंत्र को चलाने या स्थापित करने की प्रणाली या किसी प्रकार का भोजन बनाने की विधि समझाने के लिए भी आपको इस प्रकार की वर्णनात्मक रचना

का सहारा लेना पड़ सकता है। इस इकाई में हम इस प्रकार के वर्णात्मक लेखन पर विस्तार से विचार करेंगे।

10.2 व्यक्ति का वर्णन

इस गद्यांश को पढ़िए -

रमेश सत्रह वर्ष का दुबला पतला और लंबा लड़का है। लोग उसे लंबू कहकर चिढ़ाते हैं। उसका कद छह फुट से कुछ अधिक है। चेहरा पीला, जैसे टी बी का मरीज़ हो। लगता है कि उसे ठीक तरह से खाने-पीने को नहीं मिलता। कुपोषण उसके चेहरे से झलकता है।

उपर्युक्त अंश में - दुबला पतला, लंबा शारीरिक गठन को व्यक्त करने वाले शब्द हैं। छह फुट लंबा - कद को व्यक्त करने वाली अभिव्यक्ति है। इसी प्रकार लंबा, ठिगना, छोटा, नाटा, मोटा, पतला कमजोर, हट्टा कट्टा आदि शारीरिक गठन को व्यक्त करने वाले विशेषण शब्द हैं - सत्रह वर्ष, जवान, बूढ़ा, प्रौढ़ आदि शब्द आयु का अनुमान व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार छोटा, ठिगना, छह फुट, 160 से.मी. आदि कद को व्यक्त करते हैं।

अभ्यास-1

1. इस अंश को पढ़िए -

   जब मोहन पंद्रह वर्ष का था तब उसका कद साढ़े पाँच फुट और वजन 80 किलो था। सब उसको मोटू कहकर चिढ़ाते थे। उसका शरीर थुलथुल था। हर वक्त कुछ न कुछ खाता रहता था।

   बीस वर्ष का होते होते, उसका कद छह फुट हो गया। उसने व्यायाम करना शुरू कर दिया। कुछ ही महीनों के बाद उसका वजन 80 किलो से घटकर 65 किलो हो गया। शरीर में कसावट आ गई और वह एक सुंदर स्वस्थ और आकर्षक युवक बन गया।

   मोहन की आयु, कद, वजन, शारीरिक गठन तथा रंगरूप के बारे में निम्नलिखित सारणी को भरिए।

आयु	पंद्रह वर्ष	बीस वर्ष
कद		
वजन		
शारीरिक गठन		
रंग रूप		

अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

उपर्युक्त गद्यांश में हमने व्यक्ति के बाहरी आकार का वर्णन करना सीखा। किसी पद के चयन के लिए साक्षात्कार में व्यक्तिगत विवरण के अतिरिक्त अन्य प्रकार के वर्णन की भी आवश्यकता होती है।

निम्नलिखित संवाद को ध्यान से पढ़िए। इसमें एक प्रत्याशी साक्षात्कार समिति के सम्मुख अपनी शैक्षिक योग्यताओं कार्य अनुभव आदि का वर्णन कर रहा है।

साक्षात्कार समिति के एक सदस्य - **आइए मेहता जी, बैठिए।**
मेहता - **(बैठते हुए) धन्यवाद**
सदस्य - **मेहता जी आप ने कहाँ तक पढ़ाई की है?**
मेहता - **मैने समाजशास्त्र में एम.ए. किया है।**
दूसरा सदस्य - **किस विश्वविद्यालय से?**
मेहता - **दिल्ली विश्वविद्यालय से।**
सदस्य - **आजकल आप कहीं काम कर रहे हैं?**
मेहता - **जी हाँ, मैं शिवम डिग्री कालेज में पढ़ा रहा हूँ।**
सदस्य - **कितने वर्षों से**
मेहता - **चार वर्षों से।**

सदस्य	-	चार वर्षों से, आप कितने वर्ष के हैं?
मेहता	-	जी, मैं 28 वर्ष का हूँ
सदस्य	-	लेकिन, आप दिखने में तो चौबीस-पच्चीस से अधिक के नहीं लगते। क्या आप विवाहित हैं?
मेहता	-	जी हाँ - पिछले वर्ष मैंने विवाह किया है।
सदस्य	-	आपकी अभिरुचियाँ (हॉबी) क्या क्या है?
मेहता	-	पढ़ना और संगीत सुनना।
सदस्य	-	अच्छा, ठीक है।
मेहता	-	धन्यवाद, नमस्ते

अभ्यास-2

आप किसी पद के लिए आवेदन करना चाहते हैं। अपने व्यक्तिगत विवरण के साथ-साथ शैक्षिक विवरण, कार्य अनुभव, अभिरुचियों के बारे में बताते हुए अपना 'बायो डेटा' तैयार कीजिए। इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

किसी व्यक्ति के चेहरे तथा उस पर उभरने वाले भावों से आप उस व्यक्ति के चरित्र के बारे में पता लगा सकते हैं। उसके हाव भाव व चाल से भी उसकी चारित्रिक विशेषताओं का पता चलता है।

इस गद्यांश को पढिए -

मोहन बाबू लगभग साठ वर्ष के होंगे। चौड़ा माथा, पके हुए बाल, माथे पर उभरी हुई सिलवटें, धँसी हुई आँखों, आँखें के नीचे काले धब्बे, पिचके हुए गाल, इससे मोहन बाबू की परेशानियाँ जरूर प्रकट होती हैं। बात बात पर बिगड़ने लगते हैं। उनका चिड़चिड़ापन इधर कुछ अधिक बढ़ गया है क्योंकि वे अगले वर्ष रिटायर होने वाले हैं और उनकी दो बेटियाँ अभी तक अविवाहित हैं। आर्थिक तंगी उनकी चिंता का विशेष कारण है और उनके चिड़चिड़े स्वभाव का आधार भी।

पहले मोहन बाबू ऐसे न थे। वे बहुत ही हँसमुख, मिलनसार तथा सहयोगी स्वभाव के थे। परिवार से भी ठीक ठाक थे। मस्त मौला, जैसे कोई चिंता उन्हें छू तक न गई हो लेकिन समय बदलते देर नहीं लगती। अब तो वे चिंता की प्रतिमूर्ति ही कहे जा सकते हैं।

अभ्यास-3

1. उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर विशेषण तथा उनसे संबद्ध विशेषक शब्दों को छाँटिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. नीचे कॉलम 'क' में कुछ विशेषण दिए गए हैं, कालम 'ख' में उनसे संबद्ध संज्ञाएँ। कालम 'क' और 'ख' से शब्दों को चुनकर सही जोड़े बनाइए। जैसे चौड़ा माथा

क		ख	
1.	अधपके	क.	नाक
2.	पिचके हुए	ख.	रंग
3.	झुर्रीदार	ग.	व्यक्तित्व
4.	दरमिय्याना	घ.	लड़की
5.	चपटी	ङ.	बाल
6.	थुलथुला	च.	उमर
7.	गोरा	छ.	चेहरा
8.	जवान	ज.	कद
9.	अधेड़	झ.	गाल
10.	आकर्षक	ट.	शरीर

1 ---------- 6 ----------

2 ---------- 7 ----------

3 ---------- 8 ----------

4 ---------- 9 ----------

5 ---------- 10 ----------

10.3 किसी स्थान, दृश्य या वस्तु का वर्णन

अभी तक आपने व्यक्ति के बाह्य एवं आंतरिक रूप के बारे में वर्णन करना सीखा है। अब आप किसी स्थान या दृश्य से संबंधित वर्णन के नमूने देखेंगे। इस प्रकार का वर्णन हमें जीवन की विभिन्न व्यवहारपरक स्थितियों में करना पड़ता है। - आप किसी आकर्षक या मनोरम स्थान का वर्णन किसी मित्र से करते हैं या किसी रोचक घटना की जानकारी प्रस्तुत करते हैं। किसी स्थान के वर्णन में हमें आसपास के माहौल का भी वर्णन करना होता है।

इस गद्यांश को पढ़िए -

मेरे चाचाजी का लाजपत नगर में एक छोटा सा एक मंजिला मकान है। वे इसी मकान में पिछले तीस वर्षों से रह रहे हैं। अब गली में सभी मकान दो या बहु मंजिले बन गए हैं।

इसमें एक बैठक (ड्राइंग रूम) और दो शयन कक्ष (बेडरूम) हैं। कमरों का आकार 12 फुट लंबा और 10 फुट चौड़ा है। बैठक शायद 18 x 12 की होगी। बैठक में ही टी.वी., फ्रिज और खाने की मेज है। सोफा काफी पुराना है लेकिन आज भी अच्छी स्थिति में है। पीछे आँगन है, जिसमें सुबह अच्छी धूप आती है। सर्दियों में धूप सेवन का खूब मजा रहता है। घर के सामने बरामदा है - जिसमें पहले चाचा जी का स्कूटर खड़ा रहता था, क्योंकि वे बस से आना जाना ज़्यादा पसंद करते थे। अब उन्होंने मारूति गाड़ी ले जी है जो अक्सर बरामदे में ही खड़ी रहती है।

उनके मोहल्ले में हर शनिवार को बाज़ार लगता है जिसमें जरूरत के सारे सामान काफी सस्ते दामों पर मिल जाते हैं। उनकी गली में ही आर्य समाज मंदिर और केनरा बैंक है। उन्हें प्रवचन सुनने में बड़ा आनंद आता है।

मेरे चाचा जी के दो लड़के और एक लड़की है। सब की शादी हो चुकी है और वे दूसरे शहरों में अपने-अपने परिवार के साथ रहते हैं। कभी-कभी वे अपने माता पिता से मिलने आते हैं। तब घर में बहुत रौनक रहती है। मेरे चाचाजी बहुत ही संतोषी और धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। वे अक्सर कहते भी हैं- जब आए संतोष धन, सब धन धूरि समान

उपर्युक्त गद्यांश में -

- लाजपत नगर, गली, शनि बाजार, घर, ड्राइंग रूम, बेडरूम, आँगन, बरामदा - स्थान सूचक शब्द हैं।
- फुट लंबा और 10 फुट चौड़ा, 18 x 12 फुट, छोटा सा, एक मंजिला, दो या बहुत मंजिले आदि आकार सूचक पदबंध हैं।
- गली में शनि बाजार का लगना, पिछले आँगन में सर्दियों में धूप का आनंद लेना, प्रवचन सुनने का आनंद - बच्चों के आने से घर में रौनक आना आदि दृश्यों का वर्णन करने वाली अभिव्यक्तियाँ हैं।
- जब आए संतोष धन, सब धन धूरि समान संतोषी मन को अभिव्यक्त करता है - जब किसी को संतोष रूपी धन मिल जाता है तो अन्य सभी प्रकार के धन धूल के समान लगने लगते हैं।

निम्नलिखित गद्यांश का पढ़िए -

एक बार महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी श्रावस्ती पधारे। मगध के राजा प्रसेनजित ने महात्मा बुद्ध से कहा – "भगवन्, अंगुलिमाल डाकू से मेरी प्रजा बहुत परेशान है, मैं क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।" भगवान बुद्ध ने राजा को धीरज बंधाया और कहा, "महाराज, आप चिंता न करें, आपकी यह चिंता शीघ्र ही दूर हो जाएगी।"

श्रावस्ती से महात्मा बुद्ध सीधे उस जंगल की ओर गए जहाँ अंगुलिमाल रहता था। दोपहर का समय था। भगवान बुद्ध चलते चलते थक गए थे। लेकिन वे चलते जा रहे थे, वे रुके नहीं। अचानक उन्हें एक कठोर और भारी आवाज सुनाई पड़ी - 'ठहर जा'। वे नहीं ठहरे। वे चलते ही रहे।

वही भयानक आवाज फिर सुनाई पड़ी "ठहर जा" । वे ठहर गए। उन्होंने आगे-पीछे, चारों ओर देखा। उन्हें काफी दूर सामने से एक भयानक शक्ल आती हुई दिखाई पड़ी। ऊँचा कद, काला शरीर, बिखरे हुए बाल, लाल लाल आँखें, बड़ी बड़ी मूँछे, चौड़ा सीना, हाथ में कटार और सीने पर उंगलियों की माला - ये सब देखते ही महात्मा बुद्ध समझ गए कि यही अंगुलिमाल है।

महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल से मुस्कराते हुए प्रेमपूर्वक पूछा - "मैं तो ठहर गया - तू कब ठहरेगा?" अंगुलिमाल चकित हो गया। उसके सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। लोग उसे देखकर थरथर काँपते थे। भगवान बुद्ध ने फिर प्यार से पूछा - "कब ठहरेगा तू?"

अंगुलिमाल पर भगवान बुद्ध के प्रेम भरे शब्दों का असर होने लगा। अंगुलिमाल भगवान बुद्ध के आगे नतमस्तक हो गया। वह कहने लगा – " महात्मन् - आपने मुझे राह दिखाई है। मेरी आँखें खोल दी हैं।" उसने उंगलियों की माला तोड़ कर फेंक दी। कटार दूर फेंक दी और भगवान बुद्ध का शिष्य बन गया।

अभ्यास-4

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर -

1. वर्णात्मक शब्दों और पदबंधों को छाँटिए।

.....

.....

.....

2. अंगुलिमाल के रूप वर्णन के दृश्य का प्रभाव समान्य व्यक्तियों पर क्या पड़ता है?

.....

.....

.....

3. अंगुलिमाल भगवान बुद्ध के सम्मुख नतमस्तक कैसे हुआ?

.....

.....

.....

4. "मैं तो ठहर गया - तू कब ठहरेगा?" इसमें ठहरना क्रिया से कौन-कौन से अर्थ ध्वनित होते हैं - वर्णन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

1).....

.....

2).....

.....

3).....

.....

4).....

.....

किसी दृश्य या घटना का वर्णन करते समय, हमें उसमें मौजूद वस्तुओं, लोगों तथा रोचक घटनाओं का वर्णन करना होता है। इसके लिए पैनी दृष्टि तथा सूक्ष्म विश्लेषण क्षमता का विकास आवश्यक है।

इस गद्यांश को पढिए -

मुझे पिताजी का पत्र मिला और माँ की बीमारी का पता चला। मैंने तुरंत माँ से मिलने के लिए जबलपुर का कार्यक्रम बनाया। जल्दी जल्दी सामान तैयार किया और नई दिल्ली स्टेशन के लिए आटो लिया। रेलवे स्टेशन मेरे घर से कोई 12 किलोमीटर दूर है लेकिन कभी कभी भीड़ के कारण, स्टेशन पहुँचने में एक घंटा भी लग जाता है। सौभाग्य से इस बार आधा घंटा ही लगा।

जबलपुर का टिकट खरीदने के लिए मैं टिकट घर पहुँचा - वहाँ का दृश्य देखकर तो मैं धक रह गया। सभी खिड़कियों पर लंबी लंबी लाइनें थी। एक लाइन में मैं लग गया। मेरे आगे कोई पंद्रह-बीस लोग थे। गाड़ी छूटने में केवल आधा घंटा शेष था। खिड़की तक पहुँचते पहुँचते मुझे बीस मिनट लग गए। मैंने दूसरे दर्जे का टिकट खरीदा और सामान लेकर जल्दी जल्दी प्लेटफार्म पर पहुँचा। प्लेटफार्म पर काफी भीड़ थी। 'अनारक्षित डिब्बे सबसे पीछे लगते हैं' -- मुझे एक कुली ने बताया। अब गाड़ी छूटने में केवल चार-पाँच मिनट ही रह गए थे। पीछे से दूसरे डिब्बे में चढ़ने के लिए लाइन लगी थी और एक सिपाही लाइन को नियंत्रित कर रहा था। डिब्बे में मुझे बैठने की जगह मिल गई। मैंने साथ वाले यात्री से पूछा -- आप कहाँ तक जाएँगे? 'जबलपुर' उसने उत्तर दिया। मैंने मन ही मन सोचा -- चलो अच्छा हुआ, जबलपुर तक साथ रहेगा।

उपर्युक्त गद्यांश के अधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए -

अभ्यास-5

1. लेखक की घर से स्टेशन तक की यात्रा का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2. टिकट घर पर टिकट खरीदने के दृश्य का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3. लेखक को गाड़ी के डिब्बे में कैसे स्थान मिला?

.....

.....

.....

.....

10.4 स्थिति या दशा का वर्णन

अभी तक आपने किसी व्यक्ति, स्थान, घटना या दृश्य का वर्णन करना सीखा है। इस खंड में हम आपको वस्तुस्थिति अथवा दशा का वर्णन करना सिखाएँगे। इस प्रकार का वर्णन हमें किसी सार्वजनिक कार्यक्रम, कालोनी में अस्वास्थ्यकर रहन-सहन या यातायात की समस्या या अन्य कठिनाइयों के लिए स्थानीय प्रशासन का ध्यान केंद्रित करने के लिए समाचार पत्र में संपादक को लिखना पड़ सकता है।

इस गद्यांश को ध्यान से पढ़िए

दिल्ली विकास प्राधिकरण (डी.डी.ए.) ने विभिन्न स्थानों पर कृषि भूमि का अधिग्रहण करके कई प्रकार के बहुमंजिला फ्लैटों का निर्माण किया है। साथ ही भवन निर्माण हेतु प्लाटों का भी विकास किया है। दिल्ली की आवास समस्या को सुधारने में डी.डी.ए. का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पश्चिमी दिल्ली में जनकपुरी, एक समय में, एशिया की सबसे बड़ी कालोनी कहलाती थी। इस कालोनी के बीचो बीच कई गाँव पड़ते थे जिनके चारों तरफ डी.डी.ए. ने प्लाटों या फ्लैटों का विकास किया। गाँवों की जमीन को लाल डोरा के अंतर्गत माना जाता है और उसमें निर्माण कार्य के लिए कोई नक्शा पास कराने की आवश्यकता नहीं होती। फिर क्या था इन गाँवों में अंधाधुंध निर्माण होने लगा। गाँव के चारों तरफ छोटी छोटी दुकानें बनती गईं। जगह-जगह कूड़ेदान बने/ गाँवों के अंदर छोटी छोटी कोठरियाँ बनाकर उन्हें किराए पर उठाया जाने लगा। गाँवों के अंदर गंदगी, बरसात के मौसम में कीचड़ और बदबू से अक्सर महामारी फैलने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। गाँवों की छोटी छोटी कोठरियों में कई कई बच्चों वाले परिवार का रहना -- गांवों की नालियों में कूड़ा फेंकना, गंदगी फैलना -- यहाँ के जीवन को नारकीय बना देता है। ऐसा माहौल स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।

उपर्युक्त अंश में अपने गाँवों के अंदर की दशा और उनमें रहने वालों के नारकीय जीवन के बारे में पढ़ा।

अभ्यास-6

1. उपर्युक्त गद्यांश को आधार बनाकर आप समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए जिसमें गांवों में रहने वाले निम्नवर्गीय लोगों के जीवन को सुधारने के लिए प्रयासों का उल्लेख कीजिए। इसमें आप निम्नलिखित अभिव्यक्तियों का उपयोग कर सकते हैं --

   - गड्ढों में पानी भरना और मच्छरों का पलना

- छोटे बच्चों को खुली नालियों में पेशाब/टट्टी के लिए बैठाना
- गलियों में परिवारों का भोजन करना एवं जीना
- गलियों में कुत्तों की दुर्गंध
- गाय-भैंसों के गोबर की दुर्गंध
- कीचड़-गंदगी के कारण तंग गलियों में से निकलने में कठिनाई।
- कूड़ा गलियों में फेंकना

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

10.5 कार्य प्रणाली या प्रक्रिया का वर्णन

किसी यंत्र को कैसे स्थापित किया जाता है या खाना कैसे बनाया जाता है, इस प्रकार का वर्णन करने के लिए हमें कई अवसरों पर आवश्यकता पड़ती है।

निम्नलिखित संवाद को पढ़िए -

पूर्णिमा - **सुगंधि, तुम्हारी इडली तो बहुत ही स्वादिष्ट बनी हैं। कैसे बनाती हो ऐसी स्वादिष्ट इडलियाँ?**

सुगंधि - **इडली बनाना बहुत ही आसान है।**

पूर्णिमा - **जरा बताओ तो।**

सुगंधि - **200 ग्राम चावल लो और अच्छी तरह साफ कर लो। चार पाँच घंटे चावल को पानी में भिगो कर रख दो। फिर मिक्सी में चावल को पीस कर पेस्ट बना लो। इसमें थोड़ा दही मिलाकर दो तीन घंटे ढक कर रख दो।**

पूर्णिमा - **फिर .....**

सुगंधि - **फिर प्रेशर कुकर में थोड़ा पानी डालकर इडली स्टेंड में थोड़ा घी या तेल लगाकर चावल का पेस्ट डालकर कुकर बंद कर दो। कुकर की सीटी न लगाओ। थोड़ी देर**

में भाप से इडलियाँ तैयार हो जाएँगी। अब कुकर खोल कर इडलियाँ निकाल लो। बस, इडलियाँ तैयार है। सांबर या नारियल की चटनी तैयार करके खाई जा सकती हैं।

पूर्णिमा - 200 ग्राम चावल से कितनी इडलियाँ बन जाएँगी।

सुगंधि - लगभग 20। वैसे आजकल 'इडली मिक्स' पाउडर भी मिलता है जिसे पानी में मिलाकर सीधे इडलियाँ बनाई जा सकती हैं। सूजी से भी इडलियाँ बनाई जा सकती हैं।

पूर्णिमा - अब मैं भी, इस रविवार को, घर में नाश्ते के लिए इडलियाँ तैयार करूँगी।

ध्यान दीजिए -- इस प्रकार की प्रक्रिया समझाने या वर्णन करने के लिए विशिष्ट प्रकार के वाक्य साँचों का प्रयोग किया जाता है। आदेशात्मक क्रिया रूप का प्रयोग दृष्टव्य है, जैसे --

1. चावल का आटा लो/लीजिए।
2. पानी में भिगो दो/दीजिए।
3. कुकर में थोड़ा पानी डालो/डालिए।

इसी प्रकार के वर्णन के लिए -- कर्म वाच्य का प्रयोग भी किया जा सकता है । जैसे -

1. स्वाद के अनुसार नमक मिलाया जाता है।
2. प्रेशर कुकर की सीटी हटा दी जाती है।
3. धीमी आँच पर पकाया जाता है।

किसी प्रक्रिया के वर्णन में -- नित्य वर्तमान वाली वाक्य संरचना का प्रयोग भी किया जा सकता है -

1. पहले थोड़ा चावल लेते हैं।
2. उसे तीन चार घंटे पानी में भिगोकर रखते हैं।
3. फिर मिक्सी में उसका 'पेस्ट' बनाते हैं।
4. फिर तवे पर थोड़ा तेल लगाते हैं और पेस्ट को तवे पर फैला देते हैं।
5. इस प्रकार 'दोसा' तैयार करते हैं।

अभ्यास-7

1. आप अपने किसी मित्र को दोसा बनाने की प्रक्रिया समझाने का वर्णन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदन

निम्नलिखित संवाद को पढ़िए -

सुरेश - रमेश तुम्हे मालूम है कि मुझे, अमेरिका की एक कंपनी में, नौकरी मिल रही है।

रमेश - यह तो बड़ी खुशी की बात है। तो हो जाए पार्टी!

सुरेश - पार्टी तो होगी ही। पर, अभी बहुत-सी औपचारिकताएँ पूरी करनी हैं। पासपोर्ट बनवाना है। तभी मुझे नियुक्ति-पत्र मिलेगा।

रमेश - तो, पासपोर्ट बनवाने में क्या समस्या है। अब तो पासपोर्ट बनवाना बहुत सरल हो गया है।

सुरेश - तुमने भी तो, हाल ही में, पासपोर्ट बनवाया है, जरा मुझे भी तो बताओ, मुझे क्या क्या करना होगा।

रमेश - सबसे पहले क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय से आवेदन पत्र ले आओ। छह फोटो खिंचवा लो, फार्म भर कर पासपोर्ट फीस के साथ जमा कर दो। एक महीने में पासपोर्ट घर आ जाएगा।

सुरेश - फार्म में क्या क्या भरना होगा।

रमेश - अपना व्यक्तिगत विवरण -- नाम, पिता का नाम, माता का नाम, कद, आयु, वजन, जन्म तिथि, जन्म स्थान, पिछले दो वर्षों में रहने वाले स्थान का विवरण, बस यही सब देना है। और फिर विदेश जाने का कारण लिखना होगा इसके लिए तुम नौकरी के पत्र की प्रति लगा सकते हो। फार्म भर कर तुम्हें अपना फार्म किसी सरकारी अधिकारी या प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट से साक्ष्यांकित कराना होगा।

सुरेश - क्या इसके लिए पुलिस जाँच भी होती है?

रमेश - हाँ, स्थानीय पुलिस थाने से कोई घर पर आएगा, उसे आवास का प्रमाण पत्र, राशन कार्ड की नकल या चुनाव पहचान पत्र की प्रति दे देना

सुरेश - और कुछ?

रमेश - तुम्हें अपने मोहल्ले के दो ऐसे व्यक्तियों का विवरण भी देना होगा जो तुम्हें अच्छी तरह से जानते हों।

सुरेश - यह तो सब हो जाएगा।

रमेश - तब तो पासपोर्ट बहुत जल्दी बन जाएगा। अगर किसी उच्च सरकारी अधिकारी का परिचय पत्र आवेदन पत्र के साथ लगा दो तो बिना पुलिस जाँच के भी पासपोर्ट बन सकता है।

सुरेश - बहुत बहुत धन्यवाद। मैं आज ही फार्म लेने जाता हूँ।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए।

अभ्यास-8

आपका मित्र गाड़ी चलाने का लाइसेंस बनवाना चाहता है। उसे इस संबंध मे आवश्यक निर्देश देते हुए लाइसेंस बनवाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए। अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

.....

.....

.....

10.6 सारांश

इस इकाई में आपने निम्नलिखित प्रकार के वर्णनात्मक लेखन का अध्ययन किया –

- किसी व्यक्ति के बाह्य रूप तथा उसकी आदतों, पसंद, नापसंद, अभिरुचियों आदि का वर्णन
- किसी स्थान दृश्य या वस्तु का वर्णन
- किसी प्रकार के भोजन को बनाने की विधि; तथा
- पासपोर्ट/लाइसेंस बनवाने की विधि

10.7 अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास-1

आयु	पंद्रह वर्ष	बीस वर्ष
कद	साढ़े पाँच फुट	छह फुट
वजन	80 किलो	65 किलो
शारीरिक गठन	थुलथुला	कसा हुआ
रंग रूप	मोटू	स्वस्थ, सुंदर

अभ्यास-2

बायो डाटा

नाम	:	रमेश
पिता का नाम	:	श्री राकेश मोहन
जन्म तिथि	:	20 अक्तूबर, 1969
वर्तमान आयु	:	30 वर्ष
कद	:	5 फुट 8 इंच
वजन	:	71 किलो
पता (घर)	:	बी-1/438, जनकपुरी, नई दिल्ली
पता (कार्यालय)	:	केंद्रीय हिंदी निदेशालय, राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066
दूरभाष	:	5598929 (घर)

शैक्षिक योग्यताएँ :

डिग्री	वर्ष	विश्वविद्यालय	श्रेणी	विषय
बी.काम	1989	दिल्ली	प्रथम	वाणिज्य व अर्थशास्त्र
एम.ए.	1991	दिल्ली	प्रथम	वाणिज्यशास्त्र

अनुभव : सात वर्ष

संस्था	वर्ष	पद छोड़ने का कारण
केंद्रीय हिंदी निदेशालय	1992 से अब तक	निजी

अभिरुचियाँ : संगीत सुनना, बैडमिंटन खेलना

(हस्ताक्षर)
रमेश मोहन

दिनांक : 29.9.99

अभ्यास-3

1.

चौड़ा	माथा
पके हुए	बाल
माथे पर	उभरी हुई सिलवटें
धँसी हुई	आँखें
काले	धब्बे
पिचके हुए	गाल
अगले	वर्ष
आर्थिक	तंगी
चिड़चिड़ा	स्वभाव
हँसमुख	
मिलनसार	
सहयोगी	

2. 1 (ङ) 2 (ञ) 3 (छ) 4 (ज) 5 (क) 6 (ञ) 7 (ख) 8 (घ) 9 (च) 10 (ग)

अभ्यास-4

1. महात्मा, मगध की, दोपहर का, कठोर, भारी, भयानक, ऊँचा, काला, बिखरे हुए, लाल लाल, बड़ी-बड़ी, चौड़ा, हाथ में, सीने पर, उंगलियों की

2. अंगुलिमाल को देखकर सामान्य व्यक्ति डर से काँपते थे। उसके सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती थी।

3. भगवान बुद्ध के मुस्कराते हुए प्रेम पूर्वक बोलने का अंगुलिमाल के मन पर असर हुआ। उसमें आत्मविश्लेषण की अनुभूति हुई और वह महात्मा बुद्ध के आगे नत्मस्तक हो गया।

4. यहाँ 'ठहरना' क्रिया के दो अर्थ है - सामान्य अर्थ में 'रुकना' चलना का विलोम 'ठहरना' है। दूसरे अर्थ में 'ठहरना' का अर्थ है किसी कार्य को करना बंद करना। अंगुलिमाल को हत्याएँ करने से रोकने के अर्थ में महात्मा बुद्ध ने 'ठहरना' क्रिया का प्रयोग किया है।

अभ्यास-5

1. लेखक ने घर से स्टेशन की यात्रा आटो से की। वैसे स्टेशन पहुँचने में एक घंटा तक लग जाता था। लेकिन इस बार उसे आधा घंटा ही लगा।

2. टिकट घर पर टिकट खरीदने वालों की काफी भीड़ थी। प्रत्येक खिड़की पर लम्बी लम्बी कतारें थी। लेखक को टिकट खरीदने में बीस मिनट लग गए।

3. गाड़ी के डिब्बे में चढ़ने के लिए यात्रियों की लाइन लगी हुई थी और एक पुलिस का सिपाही उसे नियंत्रित कर रहा था। लेखक को डिब्बे में बैठने का स्थान मिल गया।

अभ्यास-6

संपादक
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली

मान्यवर,
मैं आपके समाचार पत्र के माध्यम से स्थानीय प्रशासन का ध्यान हमारी कालोनी की शोचनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैं पश्चिमी दिल्ली के असालत पुर गाँव में रहता हूँ। इधर असालत पुर गाँव के चारों ओर डी.डी.ए की कालोनी का विकास हुआ है, जिसमें सुंदर इमारतें, साफ सुथरी सड़कें और स्वास्थ्यकर माहौल के दर्शन होते हैं।

असालत पुर गाँव में घुसते ही ऊबड़-खाबड़ सड़कें, गंदी तंग गलियों और उनमें आवारा कुत्तों का साम्राज्य, गलियों में चारपाई से चारपाई सटी हुई, हर घर के बाहर कूड़ा सड़ांध बदबू, गंदगी से उफनती नालियों के दर्शन होते हैं। बरसात के मौसम में जगह जगह पानी भर जाना तो आम बात है। गाँव में मलेरिया के काफी मामले प्रकाश में आ चुके हैं।

गाँव में छोटी छोटी कोठरियों को, आसपास काम करने वाली महिलाओं तथा फैक्टरियों में काम करने वाले मजदूरों को, किराए पर उठाया जाता है। इनमें बड़े परिवार रहते हैं। गली में ही खाना बनाते हैं, वहीं खाते हैं, बच्चों को नहलाते हैं और नालियों में बच्चे टट्टी पेशाब करते हैं। गाँव वालों की गाय भैंसों के गोबर की सड़ांध, ये सब यहाँ के जीवन को नारकीय बना देते हैं।

आपके समाचार पत्र के माध्यम से स्थानीय प्रशासन से अनुरोध है कि वे गाँव की सफाई की ओर ध्यान दें -- नालियों की सफाई करे तथा गलियों में गंदगी फैलाने से लोगों को रोके। नही तो, गाँव में महामारी फैलने की आशंका हो सकती है।

सधन्यवाद

भवदीय

दिनांक 24 सितंबर 99

(राधे श्याम)

अभ्यास-7

गीता	दोसा बनाने की विधि क्या है ?
सुरेखा	पहले 100 ग्राम चावल और 50 ग्राम उड़द की दाल लो। दोनों को अच्छी तरह साफ कर लो। फिर तीन चार घंटे पानी में भिगोकर रख दो। थोड़ी इमली और लाल मिर्च को पीस लो। अब चावल दाल और इमली - लाल मिर्च को मिक्सी में मिलाकर, पीसकर 'पेस्ट' बना लो।
गीता	फिर .....
सुरेखा	अब तवा गरम करो - उस पर थोड़ा तेल या घी लगाओ और पेस्ट को तवे पर पतला पतला फैलाओ, एकाध मिनट ढक्कन से ढक दो और जब डोसा पक जाए तो उसे पलट दीजिए। इसमें सूखी सब्जी भी भरी जा सकती है और मसाला दोसा बन जाता है। दोनों तरफ भूने जाने के बाद, दोसा उतार लें।
गीता	100 ग्राम चावल से कितने दोसे बनेंगे -
सुरेखा	12 तो बन ही जाएँगे।

अभ्यास-8

1. पहले अपने इलाके के यातायात प्राधिकरण से गाड़ी चलाने के लिए लाइसेंस बनवाने का आवेदन पत्र लो। उसमें अपेक्षित सभी विवरण भर लो। अपनी आयु के प्रमाण पत्र, डाक्टरी प्रमाण पत्र तथा लाइसेंस शुल्क जमा कर दो।

   फिर लाइसेंस अधिकारी के पास जाना होगा वह आपसे यातायात संकेतों के बारे में कुछ प्रश्न पूछेगा, उनका उत्तर देने के बाद 'प्रशिक्षुक लाइसेंस' बना दिया जाएगा। यह छह महीने तक लागू रहेगा।

   इस अवधि में गाड़ी चलाने की परीक्षा देकर, सफल होने की स्थिति में स्थायी लाइसेंस बना दिया जाता है।